नलिनी मलानी

समय की नज़ाकत

क्यूरेटर: पूजा वैश

रेखांकन, चित्रकारी, नाटक, डिजिटल मीडिया और फ़िल्म जैसे विविध माध्यमों के नवाचारी मेल के लिए मशहूर नलिनी मलानी ने कला में नए रास्ते बनाए हैं। उनके काम में रूप की तरलता देखने को मिलती है – चाहे वह बिम्बों को आकार देने में हो, उनको विरूप करने में हो, मिटाने में हो, एनिमेट करने में हो या परत-दर-परत संजोने में हो। वहाँ चीज़ें लगातार बदल रही हैं, कुछ बनने की प्रक्रिया में हैं, जिससे स्थापित मान्यताएँ लगातार टूटती-बिखरती रहती हैं। मलानी की कला में रोज़मर्रा की ज़िन्दगी, इतिहास, मिथक, साहित्य और कला के किरदार दिखते हैं जो अपने दौर की कहानी बयान करते हैं और औरतों की सामाजिक भूमिकाओं और उनके चित्रण पर फिर से विचार करने की अपील करते हैं। अपने कला जीवन के छह दशकों से भी ज़्यादा समय में नए माध्यमों और तकनीकों के साथ शिद्दत से किए गए प्रयोगों ने नलिनी को अपनी विज़ुअल भाषा में लगातार नवाचार करने का मौक़ा दिया।

इस प्रदर्शनी में मलानी के सौ से भी ज़्यादा चित्र शामिल हैं जो साठ और सत्तर के दशक में उनके शुरुआती काम को दिखाते हैं। इनमें से 80 पहले कभी प्रदर्शित नहीं हुए हैं। इनसे एक कलाकार के बतौर मलानी के विकास की झलक मिलती है और भारतीय कला इतिहास के फ़लक पर उनकी कला को एक नई रोशनी में समझने का मौक़ा मिलता है।

समय की नज़ाकत में एक युवा देश में एक युवा स्त्री कलाकार का चित्र देखने को मिलता है। सन् 1946 में जन्मी मलानी आज़ादी के बाद के उन विचारकों की जमात में शामिल हैं जिनकी दृष्टि कला में शैली और सार्वभौमिकता को तरजीह देने वाले वेस्टर्न आधुनिक आदर्शों से अलग ऐसे विषयों व किरदारों की तरफ जाती थी जिनमें आज़ादी के बाद के भारत की सामाजिक-राजनीतिक हक़ीकत की झलक मिलती हो। इस प्रदर्शनी में मलानी के अपने काम में आए इस बदलाव को दिखाया गया है, जो उनके 1965-67 की वॉटर कलर डायरी से 1981 में हुई ऐतिहासिक प्रदर्शनी ‘प्लेस फ़ोर पीपल’ में देखने को मिलता है।

जेजे स्कूल ऑफ़ आर्ट में पढ़ाई के दौरान 1964 से 1969 तक नालिनी को भुलाभाई मेमोरियल इंस्टिट्यूट में एक स्टुडियो मिला। यह इंस्टिट्यूट कलाकारों, नाटककारों, नर्तकों और संगीतकारों का अड्डा था। यहाँ उन्होंने इंटरडिस्सीप्लिनरी विचारों और एस्थेटिक्स की दुनिया की पड़ताल की जो जेजे स्कूल की परम्परागत अकादमिकता के दायरे से बाहर था: "जेजे स्कूल ऑफ़ आर्ट में अमूर्तन पर पाबन्दी थी"। 1969 में उन्होंने बहु-विषयी विज़न एक्सचेंज वर्कशॉप (VIEW) में भागीदारी की, जिसकी स्थापना कलाकार अकबर पद्मज़ी ने की थी। वहाँ उन्होंने प्रायोगिक फ़िल्मों और कैमरे के बिना फोटो की श्रृंखला बनाई। उस वक़्त ये माध्यम उतने चलन में नहीं थे। उसके बाद, 1970-72 के दौरान फ्रेंच सरकार की छात्रवृत्ति पर पेरिस में रहते हुए मालिनी ने फ़िल्मों के तमाम सिद्धांतों और समकालीन विद्वानों के सामाजिक दर्शन को करीब से जाना। इन अनुभवों ने उनकी अपनी मल्टीमीडिया अभिव्यक्तियों को गढ़ने में बड़ी भूमिका निभाई।

मलानी की कला में एक रैडिकल छाप है जिसकी जड़ें उन तमाम वैकल्पिक जगहों में हैं जिनमें वे अपने शुरुआती दौर में रही थीं। इससे औपचारिक शिक्षा के दायरों के बाहर मौजूद कलाकारों के समूहों की झलक भी देखने को मिलती है जिनका हिंदुस्तानी अवाँ-गार्द पर प्रभाव पड़ा।

इस प्रदर्शनी में एक औरत के नज़रिए से शहर और समाज की, मलानी की विकसित हो रही दृष्टि देखने को मिलती है। मख़मल की फोटो और जैविक रूप के फ़ोटोग्राम, एब्स्ट्रैक्शन मैं नारीत्व को दर्शाते है। साथ ही, सत्तर के दशक के कैनवास, जो एक बच्ची को शहरी ज़िन्दगी की जटिलताओं में रची-बसी नायिका की तरह प्रस्तुत करते हैं। मुंबई के लोहार चॉल इलाके में स्थित उनके स्टुडियो का प्रभाव उनकी कला में सामाजिक ग़ैर-बराबरी के चित्रण में दिखाई देता है। इसकी झलक 'हिज़ लाईफ' (His Life) श्रृंखला में देखने को मिलती है।

इस प्रदर्शनी के लिए मलानी के साथ काम करना असल में चित्रों को समय और स्मृतियों के लम्बे दौर में रखकर देखने की तरह रहा है। अपनी ही कला यात्रा को वर्तमान के नज़रिए से देखते हुए मलानी पुरानी यादों व किस्सों के ज़रिए उन निर्णायक मोड़ों को सामने रखती है जिनका प्रभाव उनकी कला पर पड़ा।